2024

प्रश्न: यह कहना कहाँ तक उचित है कि प्रथम विश्वयुद्ध मूलत: शक्ति-संतुलन को बनाए रखने के लिये लड़ा गया था?

(250 शब्द, 15 अंक)

How far is it correct to say that the First World War was fought essentially for the preseration of balance of power?

उत्तर: प्रथम विश्व युद्ध (WWI), जुलाई 1914 से नवंबर 1918 तक चला, मित्र राष्ट्रों और केंद्रीय शक्तियों के बीच लड़ा गया था। अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि यूरोप में शक्ति संतुलन को बनाए रखने के लिये युद्ध हुआ था, यह दृष्टिकोण केवल आंशिक रूप से उन जटिल परिस्थितियों की व्याख्या करता है जिनके कारण संघर्ष हुआ।

एक कारण के रूप में शक्ति संतुलन

- **यूरोपीय गठबंधन:** एक दूसरे की शक्ति को संतुलित करने का लक्ष्य।
- **ट्रिपल एंटेंटे:** इसमें फ्रांँस, रूस और यूनाइटेड किंगडम शामिल हैं।
- **त्रिपक्षीय गठबंधन:** इसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली शामिल थे जो यूरोप में अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते थे।

बदलती शक्ति गतिशीलता

- **जर्मनी का उदय:** जर्मनी के तीव्र औद्योगीकरण और सैन्य विस्तार को अन्य शक्तियों द्वारा खतरे के रूप में देखा गया।
- युद्ध के बाद, विजेता ने जर्मनों को आर्थिक और प्रादेशिक दोनों रूप से कमज़ोर कर दिया तथा अपने कमज़ोर प्रतिद्वंद्वी फ्रांँस को मज़बूत कर दिया।
- **साम्राज्यों का पतन:** ओटोमन और ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यों के कमज़ोर होने के कारण शक्ति शून्यता एवं अस्थिरता का निर्माण हुआ।

अन्य कारक

- **प्रतिस्पर्द्धी साम्राज्यवाद:** प्रथम विश्व युद्ध से पहले, अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्से अपने कच्चे माल के कारण यूरोपीय देशों के बीच विवाद का विषय बने हुए थे।
- बाज़ार (अफ्रीका) के लिये बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा और बड़े साम्राज्यों की इच्छा के कारण टकराव में वृद्धि हुई, जिसने विश्व को प्रथम विश्व युद्ध में धकेलने में मदद की।
- **राष्ट्र की ताकत के रूप में सैन्य लामबंदी:** वर्ष 1914 तक जर्मनी में सैन्य निर्माण में सबसे अधिक वृद्धि हुई। ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी दोनों ने इस समयावधि में अपनी नौ-सेनाओं में काफी वृद्धि की।
- सैन्यवाद में इस वृद्धि ने राष्ट्र की ताकत के रूप में जन-आंदोलन के विचार को बढ़ावा दिया, जिससे देश युद्ध की ओर अग्रसर हुए। उदाहरण: रूसी सीमा की ओर जर्मन जन-आंदोलन ने रूस को जर्मनी के खिलाफ भड़का दिया।
- **राष्ट्रवाद:** यूरोप भर में राष्ट्रवादी भावनाओं (राष्ट्र के आधार के रूप में नस्ल/नृजातीयता) के उदय ने तनाव और क्षेत्रीय विवादों को बढ़ावा दिया। उदाहरण: बोस्निया और हर्जेगोविना में रहने वाले स्लाविक लोग ऑस्ट्रिया-हंगरी का हिस्सा नहीं बना रहना चाहते थे।

निष्कर्ष: प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने में शक्ति संतुलन का संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण कारक था, लेकिन यह एकमात्र कारण नहीं था। राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद, आर्थिक प्रतिद्वंद्विता और घरेलू दबावों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2021

प्रश्न: "दोनों विश्वयुद्धों के बीच लोकतंत्रीय राज्य प्रणाली के लिये गंभीर चुनौती उत्पन्न हुई।" इस कथन का मूल्यांकन कीजिये।

(250 शब्द, 15 अंक)

"There arose a serious challenge to the Democratic State System between the two World Wars." Evaluate the statement.

उत्तर : जहाँ प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 ई. तक चला, वहीं द्वितीय विश्व युद्ध 1939 से 1945 ई. तक मित्र व धुरी राष्ट्रों के बीच लड़ा गया। यद्यपि दोनों युद्ध के बीच की अवधि अपेक्षाकृत कम थी, फिर भी विश्व में कई महत्त्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हुए, जिन्होंने लोकतंत्रीय राज्य प्रणाली के लिये गंभीर चुनौती उत्पन्न कर दी, जिसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

- युद्धोपरांत लोकतांत्रिक देशों में आर्थिक संकट व पुनर्निर्माण की समस्या उत्पन्न।
- तात्कालिक लोकतांत्रिक सरकारें जब आर्थिक संकट का समाधान न कर पाईं तो दक्षिणपंथी सरकारों की मांग की जाने लगी।
- रूसी क्रांति के पश्चात् समाजवादी क्रांति का तेज़ी से प्रसार हुआ, जिससे पूंजीवादी व्यवस्था पर संकट उत्पन्न।
- बढ़ती बेरोज़गारी और राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के नाम पर इटली को मुसोलिनी की फांसीवादी सरकार ने विश्व को द्वितीय विश्वयुद्ध की ओर धकेल दिया।
- 1929 की मंदी से उत्पन्न परिस्थितियों का फायदा उठाकर जर्मनी में हिटलर ने शीघ्र ही समूचे विश्व को द्वितीय विश्वयुद्ध की दहलीज़ पर लाकर खड़ा कर दिया।
- स्पेन व रोमानिया में गृहयुद्ध की स्थिति।
- इराक का पैन-अरब आंदोलन, जिसने नाज़ीवाद का समर्थन किया।
- औपनिवेशिक शक्तियों के रूप में जापान का उदय।

अत: कहा जा सकता है कि दोनों विश्वयुद्धों के बीच उत्पन्न आर्थिक संकट व संरचनात्मक पुनर्निर्माण की समस्या ने लोकतंत्रात्मक प्रणाली को फासीवाद, नाज़ीवाद व साम्यवाद जैसे विकल्पों की ओर मोड़ने का प्रयास किया।

2019

प्रश्न: स्पष्ट कीजिये कि अमेरिकी एवं फ्राँसीसी क्रांतियों ने आधुनिक विश्व की आधारशिलाएँ किस प्रकार निर्मित की थीं।

(250 शब्द , 15 अंक)

Explain how the foundations of the modern world were laid by the American and French Revolutions.

उत्तर : 4 जुलाई, 1776 को घटित अमेरिकी क्रांति एवं 1789 में घटित फ्राँसीसी क्रांति ने विश्व के लिये एक नवीन युगांतकारी, क्रांतिकारी एवं मार्गदर्शक घटना का काम किया। इसके साथ ही शासित राष्ट्रों के लिये उच्च आदर्श प्रस्तुत किया, जो निम्नलिखित हैं–

आधुनिक विश्व में अमेरिकी क्रांति का योगदान

- मानव अधिकारों पर ज़ोर
- स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता की प्रेरणा
- अमेरिका धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में विश्व का प्रथम देश बना
- राष्ट्रीयता के सिद्धांत को मानव समाज के समक्ष रखा
- आधुनिक युग में गणतंत्र की जननी
- इस क्रांति ने जनतंत्रात्मक प्रथा को जन्म दिया, जिसमें पहली बार आम जनता को मताधिकार प्राप्त हुआ
- लिखित संविधान
- संघीय शासन व्यवस्था का प्रयोग

आधुनिक विश्व में फ्राँसीसी क्रांति का योगदान

- स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व जैसे विचारों को जन्म दिया
- राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समानता की शुरुआत
- धर्म एवं राजनीति के पृथक्करण का सिद्धांत
- अभिव्यक्ति एवं मतदान के अधिकार की मांग
- ज्ञान एवं तर्क को बढ़ावा मिला
- महिला-पुरुष समानता की मांग

अत: यह कहा जा सकता है कि अमेरिकी व फ्राँसीसी क्रांतियों ने स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व जैसे सिद्धांतों का सूत्रपात किया, वहीं अन्य देशों के संविधान, दर्शन व दार्शनिकों को आधार भी प्रदान किया, जो आने वाले समय में विश्व इतिहास की अनेक घटनाओं के प्रेरणा स्रोत बनते दिखाई दिये।

2017

प्रश्न: मलय प्रायद्वीप में उपनिवेश उन्मूलन के प्रक्रम में सन्निहित क्या-क्या समस्याएँ थीं?

(150 शब्द , 10 अंक)

What problems were germane to the decolonization process in the Malay Peninsula?

उत्तर : द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मलय प्रायद्वीप में शामिल बर्मा, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों के अधिकांश क्षेत्रों पर जिस तेज़ी से जापान ने अधिकार किया, अमेरिका द्वारा परमाणु हमले के बाद उसी तेज़ी से ये क्षेत्र जापान के हाथों से निकल गए। 1945 में ब्रिटिश सरकार इसे स्वतंत्रता प्रदान करने के मार्ग में आगे बढ़ी, जहाँ उसे निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ा।

उपनिवेश उन्मूलन में समस्याएँ

- मलय तथा चीनी मूल के लोगों के मध्य प्रतिद्वंद्विता
- भारतीय व यूरोपीय मूल की जनसंख्या अधिक थी
- नौ रियासतें, जिनमें प्रत्येक एक सुल्तान द्वारा शासित थी
- साम्यवादी विद्रोहियों द्वारा हिंसा फैलाने के कारण आपातकाल की घोषणा
- प्रत्येक रियासत में एक स्वतंत्र विधानमंडल की स्थापना, किंतु सिंगापुर अभी भी एक उपनिवेश बना रहा

अंतत: तुकू अबुल रहमान ने बहुसंख्यक मलय व भारतीय मूल के लोगों का समर्थन हासिल कर 1957 में ब्रिटेन से सत्ता प्राप्त कर ली और आगे 1963 में मलेशियाई संघ की स्थापना की गई। बाद में सिंगापुर इस संघ से अलग हो गया। शेष समस्त मलेशियाई संघ तक अक्षुण्ण बना हुआ है।

2016

प्रश्न : पश्चिमी अफ्रीका में उपनिवेश-विरोधी संघर्ष को पाश्चात्य-शिक्षित अफ्रीकियों के नवसंभ्रांत वर्ग के द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया था। परीक्षण कीजिये। **(200 शब्द , 12½ अंक)**

The anti-colonial struggles in West Africa were led by the new elite of Western-educated Africans. Examine.

उत्तर : बर्लिन सम्मेलन 1884 में लगभग पूरे अफ्रीका का (इथियोपिया व लाइबेरिया छोड़कर) का विभाजन फ्राँस, ब्रिटेन, स्पेन तथा पुर्तगाल जैसी शक्तियों के बीच किया गया। इस विभाजन का प्रकोप नाइजीरिया, सेनेगल, गिनी, घाना जैसे पश्चिमी अफ्रीकी देशों को निर्मम शोषण के रूप में झेलना पड़ा।

प्रथम व द्वितीय युद्ध के पश्चात् पश्चिमी अफ्रीका में बढ़ते राष्ट्रवाद ने औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष को बढ़ावा दिया। इस संघर्ष का नेतृत्व पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त अफ्रीकी नवसंभ्रांत वर्ग के द्वारा किया गया।

- ब्रिटेन व अमेरिका में शिक्षा प्राप्त क्वामेन्क्रुमा ने घाना में स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व किया।

  ↓

  फलत: 1957 में घाना पश्चिमी अफ्रीका में स्वतंत्रता पाने वाला प्रथम देश बना।

- पुर्तगाल में शिक्षा प्राप्त युवक अमभल्कर कबराल ने गिनी बिसाऊ में गुरिल्ला युद्ध का नेतृत्व किया।

  ↓

  अंतत: गिनी-बिसाऊ स्वतंत्र हो गया।

- अमेरिकी शिक्षा प्राप्त युवक नाम्दी आजकिबे ने नाइजीरिया में उपनिवेश विरोधी संघर्ष का नेतृत्व किया।
  ↓
  उनके प्रयासों से 1960 में नाइजीरिया स्वतंत्र हुआ।
- फ्राँसीसी शिक्षा प्राप्त युवक तोवालोऊ होउएनोऊ द्वारा नीग्रो आंदोलन की नींव डाली गई। ↓
  पश्चिमी अफ्रीका क्षेत्र में नस्लभेद विरोधी संघर्ष को बढ़ावा दिया।
- फेलिक्स एवं लियोपोल्ड सेडार सेनघोल ने क्रमश: सेनेगल एवं आइवरी कोस्ट की स्वतंत्रता का नेतृत्व किया।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि पश्चिमी अफ्रीका क्षेत्र को स्वतंत्रता दिलाने में पाश्चात्य शिक्षित नवयुवकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि, USA और USSR का उपनिवेश विरोधी रुख, औपनिवेशिक देशों की क्षीण आर्थिक एवं सैन्य शक्ति का भी प्रमुख योगदान था।

2015

प्रश्न: क्या कारण था कि औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में घटी थी? औद्योगीकरण के दौरान वहाँ के लोगों की जीवन गुणवत्ता पर चर्चा कीजिये। भारत में वर्तमान में जीवन-गुणवत्ता के साथ वह किस प्रकार तुलनीय हैं? (200 शब्द, 12½ अंक)

Why did the industrial revolution first occur in England? Discuss the quality of life of the people there during the industrialization. How does it compare with that in India at present?

उत्तर: 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आर्थिक व तकनीकी क्षेत्र में हुए व्यापक परिवर्तनों के कारण आधुनिक व्यापार प्रणाली का विकास हुआ व उत्पादन और व्यापार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई, जिसे औद्योगिक क्रांति की संज्ञा दी जाती है।

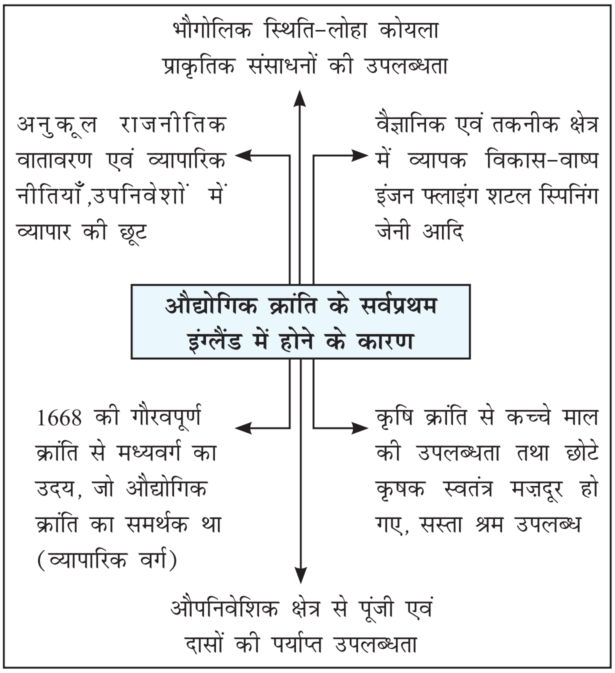

औद्योगीकरण के दौरान वहाँ के लोंगों के जीवन की गुणवत्ता

- सस्ते सामानों की उपलब्धता से शहरीकरण को बढ़ावा मिला।
- एकल परिवारों की ओर रुझान, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई।
- मलिन बस्तियों, सामाजिक अपराधों आदि की समस्याओं के कारण नैतिक नींव कमज़ोर हुई।
- बालश्रम पर ज़ोर, क्योंकि वयस्कों की तुलना में बच्चे अधिक आज्ञाकारी एवं विनम्र होते थे।

भारत में वर्तमान में जीवन-गुणवत्ता के साथ तुलना

- नौकरी के नए अवसरों की तलाश में ग्रामीण पलायन से शहरीकरण को बढ़ावा।
- औद्योगीकरण के कारण विवाह और परिवार जैसी सामाजिक संस्थाएँ रूपांतरित हो रही हैं। एकल परिवार की तरफ रुझान।
- स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, अपराध इत्यादि दशाएँ इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति से भिन्न। यहाँ लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक, जैसे– काम के घंटे तय, बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध।
- बाल मज़दूरी पर प्रतिबंध, समान कार्य के लिये समान मज़दूरी, श्रम मानकों को विभिन्न संवैधानिक व वैधानिक उपबंधों के माध्यम से निश्चित किया गया। अनुच्छेद 23, 24, 39 कंपनी एक्ट 2013 आदि।

उपरोक्त कारकों एवं प्रावधानों के तहत औद्योगिक क्रांति की तुलना में वर्तमान भारत के औद्योगीकरण में लोगों की जीवन गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जो औद्योगिक क्रांति के समय ब्रिटेन के लोगों के लिये उपलब्ध नहीं था।

प्रश्न: किस सीमा तक जर्मनी को दो विश्व युद्धों का कारण बनने का ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है? समालोचनात्मक चर्चा कीजिये। (200 शब्द, 12½ अंक)

To what extent can Germany be held responsible for causing the two World Wars? Discuss critically.

उत्तर: प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) तथा द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) मानव इतिहास की सर्वाधिक भीषण त्रासदियाँ मानी जाती हैं। साम्राज्यवाद तथा आर्थिक प्रतिद्वंद्विता व गुप्त संधियाँ, सैन्यवाद व शस्त्रीकरण ने संपूर्ण विश्व, विशेषकर यूरोप में पारस्परिक असुरक्षा, अविश्वास का वातावरण निर्मित किया और विकृत राष्ट्रवाद के उस दौर में कुछ तात्कालिक कारणों की आड़ में विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गए।

जर्मनी को विश्वयुद्धों का कारण बताने वाले कारक

प्रथम विश्वयुद्ध

- जर्मनी का आर्थिक व सैन्य शक्ति के रूप में उदय।
- यूरोप के शक्ति-संतुलन का प्रभावित होना।
- फ्राँस के विरुद्ध जर्मनी के ऑस्ट्रिया और इटली के साथ 1882 में त्रिगुट संधि ने गुटबाज़ी को प्रोत्साहित किया।
- ब्रिटेन और फ्राँस में आर्थिक एवं सैन्य असुरक्षा की भावना पैदा हुई।
- जर्मनी द्वारा ब्रिटेन से नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता प्रारंभ की गई।

ऐसे असुरक्षित वातावरण में जर्मन प्रत्युत्तर में फ्राँस, ब्रिटेन और रूस ने 1907 में त्रिगुट संधि की। इस प्रकार यूरोप दो खेमों में बँट गया। ऑस्ट्रिया को सर्बिया से युद्ध में समर्थन व फ्राँस पर आक्रमण कर जर्मनी ने युद्ध को विश्वयुद्ध बनाने में योगदान दिया।

- फिर भी जर्मनी को प्रथम विश्वयुद्ध का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि
  - ब्रिटेन और फ्राँस की साम्राज्यवादी व आर्थिक नीतियाँ
  - रूस द्वारा सर्बिया को समर्थन
  - समाचार-पत्रों एवं प्रचार साधनों द्वारा विकृत राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करना।

सभी राष्ट्रों की नीतियों में सैन्य अधिकारियों का अत्यधिक हस्तक्षेप समान रूप से प्रथम विश्वयुद्ध हेतु ज़िम्मेदार है।

द्वितीय विश्वयुद्ध

- 28 जून, 1919 को प्रथम विश्वयुद्ध में पराजित जर्मनी द्वारा वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर ने ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बीज के रूप में कार्य किया।
- आहत जर्मन राष्ट्रवाद व वैश्विक मंदी के दौर में जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ।
- हिटलर ने नि:शस्त्रीकरण का उल्लंघन कर सैन्य क्षमता में वृद्धि की तथा राइनलैंड पर अधिकार कर लिया।
- ब्रिटेन ने जर्मनी के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाई।
- जर्मनी के पोलैंड पर आक्रमण से द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हो गई।
- इस विश्वयुद्ध के प्रारंभ करने में ब्रिटेन और फ्राँस द्वारा जर्मनी पर थोपी गई अपमानजनक वर्साय की संधि, नाजीवाद, फासीवाद तथा हिटलर की आक्रामक एवं विस्तारवादी नीतियाँ ज़िम्मेदार थीं।

वस्तुत: दोनों विश्वयुद्धों के कारण रूस में जर्मनी की नीतियाँ ज़िम्मेदार थीं, किंतु जर्मनी अकेला युद्ध का कारक नहीं था, मित्र शक्तियाँ तथा यूरोप की तत्कालीन परिस्थितियाँ भी इसके लिये कम ज़िम्मेदार नहीं थीं।

2014

प्रश्न: विश्व में घटित कौन-सी मुख्य राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों ने भारत में उपनिवेश-विरोधी (एंटी कॉलोनियल) संघर्ष को प्रेरित किया? (150 शब्द, 10 अंक)

What were the major political, economic and social developments in the world which motivated the anti-colonial struggle in India?

उत्तर : भारतीय उपनिवेश विरोधी संघर्ष को प्रेरित करने वाले कई कारक थे। कुछ कारक आंतरिक थे तो कुछ बाह्य। जिन बाह्य ने भारत में उपनिवेश विरोधी संघर्ष को प्रेरित किया, वे निम्नलिखित हैं–

राजनीतक कारक

- 20वीं शताब्दी में आयरलैंड के होमरूल का प्रभाव।
- इथोपिया द्वारा इटली तथा 1905 में जापान द्वारा रूस की पराजय ने यूरोपीय राष्ट्र की अजेयता को तोड़ा।
- विश्वयुद्धों के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संस्थान की स्थापना ने भी भारत में उपनिवेश विरोधी संघर्ष को प्रेरित किया।
- 19वीं शताब्दी में मध्यवर्गीय भारतीयों पर इटली और जर्मनी एकीकरण का प्रभाव पड़ा।
- 18वीं शताब्दी में टीपू सुल्तान ने फ्राँसीसी क्रांति से प्रेरित होकर अंग्रेज़ों से संघर्ष किया।
- प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के दौर को भारतीयों ने अंग्रेज़ी सत्ता से लड़ने का अवसर माना।

आर्थिक कारक

- दो विश्वयुद्धों के दौरान ब्रिटेन ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भारतीय उद्योगों के विकास में सहायक नीतियों को लागू किया।
- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद की आर्थिक मंदी ने भारतीय उद्योगपतियों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। घनश्याम दास बिड़ला आदि।
- रूस का आर्थिक मंदी से प्रभावित न होना भारत के लिये भविष्य का आर्थिक मॉडल (आर्थिक नियोजन) प्रस्तुत किया।
- साम्राज्यवाद का मुख्य लक्ष्य उपनिवेशों से आर्थिक लाभ प्राप्त करना, दादाभाई नौरोजी, आर.सी. दत्त, गोखले ने 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' के सिद्धांत से प्रेरित किया।

सामाजिक कारक

- फ्राँसीसी क्रांति के आदर्श वाक्य समानता स्वतंत्रता एवं बंधुत्व का प्रभाव
- पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार, इल्बर्ट बिल विवाद पर एकता
- तुर्की के खलीफा को पद्च्युत करना जैसी घटनाओं ने साम्राज्यवादी सत्ता से लड़ने की प्रेरणा दी।
- प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् समाज में महिलाओं की भागीदारी व सशक्तिकरण में वृद्धि। असहयोग, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो आंदोलन में।

उपर्युक्त घटनाक्रम के अतिरिक्त विश्व स्तर पर चल रहे उपनिवेश-विरोधी आंदोलन, UNO का उदय तथा स्वयं ब्रिटेन की खराब स्थिति (प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण) ने भी भारत में उपनिवेश विरोधी आंदोलन को तेज़ी प्रदान की।

प्रश्न: लेनिन की नव आर्थिक नीति-1921 ने स्वतंत्रता के पश्चात् भारत द्वारा अपनाई गई नीतियों को प्रभावित किया था। मूल्यांकन कीजिये? (150 शब्द, 10 अंक)

The New Economic Policy–1921 of Lenin had influenced the policies adopted by India soon after independence. Evaluate.

उत्तर: 1917 के रूसी क्रांति की अवधि समाप्त होने के पश्चात् 1921 में लेनिन द्वारा अपनाई गई नई आर्थिक नीति में मार्क्सवादी सिद्धांतों के साथ-साथ पूंजीवादी तत्त्वों का भी समावेश था। इसे लेनिन ने 'स्टेट कैपिटलिज़्म' कहा। यहीं से मिश्रित अर्थव्यवस्था का जन्म हुआ। लेनिन की नीतियों के प्रति नेहरू का झुकाव था, जिसका प्रभाव आज़ादी के तुरंत बाद भारत द्वारा अपनाई गई नीतियों पर देखा गया।

लेनिन की नई आर्थिक नीतियों का भारत पर प्रभाव

- **मिश्रित अर्थव्यवस्था:** स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने मिश्रित (समाजवादी + पूंजीवादी) अर्थव्यवस्था को अपनाया। छोटे क्षेत्रों के लिये निजी उद्यमों की अनुमति तथा भारी एवं पूंजीगत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया।
- **कृषि सुधार:** किसानों को अपने अधिशेष को खुले बाज़ार में बेचने की अनुमति, व्यापक भूमि सुधार तथा कृषि सहकारी समितियाँ, कृषि विकास पर केंद्रित थीं।
- **आर्थिक नियोजन:** स्वतंत्रता पश्चात् योजना आयोग का गठन किया गया तथा पंचवर्षीय योजना को अपनाया गया और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की शुरुआत हुई।

हालाँकि भारतीय नीतियों पर सोवियत संघ का गहरा प्रभाव था, लेकिन अन्य कारक भी थे, जिन्होंने भारतीय नीतियों को प्रभावित किया–

- नेहरू का झुकाव समाजवाद की ओर भी था।
- उन्होंने कल्याणकारी राज्य की स्थापना का भी प्रयास किया।
- तीव्र औद्योगिक विकास के साथ गरीबी की चुनौती को दूर करने के लिये भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन के लिये कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए गए।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि लेनिन की नई आर्थिक नीतियों ने स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में मदद की, लेकिन भारत का अंतिम उद्देश्य साम्यवादी शासन की स्थापना करना कभी नहीं रहा। यही कारण था कि 1990 तक आते-आते भारत (LPG) उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ा तथा 1991 में सोवियत साम्यवाद का पतन हो गया।

प्रश्न: 1956 में स्वेज़ संकट को पैदा करने वाली घटनाएँ क्या थी? उसने एक विश्व शक्ति के रूप में ब्रिटेन की आत्म-छवि पर किस प्रकार अंतिम प्रहार किया? (150 शब्द, 10 अंक)

What were the events that led to the Suez Crisis in 1956? How did it deal a final blow to Britain's self-image as a world power?

उत्तर: भूमध्य सरकार और लाल सागर को जोड़ने वाली स्वेज़ नहर का निर्माण 1869 में पूरा हुआ। इसका निर्माण कार्य मिस्र द्वारा फ्राँसीसी कंपनी को दिया गया था। 1956 का स्वेज़ संकट मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल नासिर द्वारा स्वेज़ नहर का राष्ट्रीयकरण करने के निर्णय के कारण उत्पन्न हुआ।

स्वेज़ संकट को पैदा करने वाली घटनाएँ

- मिस्र की सरकार ने 1875 में स्वेज़ नहर का अधिकांश शेयर ब्रिटेन को बेच दिया।
- 1936 में एक संधि के तहत ब्रिटिश सेनाएँ सुरक्षा के नाम पर मिस्र में मौजूद थीं, जिसका मिस्र में लगातार विरोध हो रहा था।
- 1956 में कर्नल नासिर ने मिस्र के राष्ट्रपति बनने के पश्चात् स्वेज़ नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया।
- इस राष्ट्रीयकरण से स्वेज़ नहर पर ब्रिटेन और फ्राँस का नियंत्रण समाप्त हो गया। इन्होंने मिस्र पर सैन्य कार्रवाई की धमकी दी।
- स्वेज़ नहर से पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा तेल का व्यापार काफी मात्रा में होता था अत: ब्रिटेन तथा फ्राँस ने इज़राइल के साथ मिलकर मिस्र पर आक्रमण कर दिया।
- सोवियत संघ और अमेरिकी दबाव में तीनों आक्रमणकारी देशों को अपनी सेनाएँ वापस बुलानी पड़ी।
- स्वेज़ नहर पर मिस्र का अधिकार हो गया और मिस्र से ब्रिटिश सेना हट गई।

एक विश्व शक्ति के रूप में ब्रिटेन की आत्म-छवि पर अंतिम प्रहार

- इस समय ब्रिटेन का एशिया, अफ्रीका के औपनिवेशिक क्षेत्रों से नियंत्रण समाप्त होता जा रहा था।
- संयुक्त राष्ट्र संघ में घोर आलोचना, अमेरिका के साथ मतभेद, द्वितीय विश्वयुद्ध में व्यापक जनधन की हानि, अपने ही देश के लोगों द्वारा विरोध के कारण ब्रिटेन संकट में पड़ गया।
- स्वेज़ संकट ब्रिटेन के लिये दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। अब महाशक्ति का ताज ब्रिटेन से होकर अमेरिका और सोवियत संघ के पास आ गया।
- इस संकट ने ब्रिटेन के उपनिवेशों में उसकी प्रभावहीनता को उजागर कर दिया।
- अब वह विश्व में अपनी मनमानी करने की स्थिति में नहीं रह गया और अमेरिका पर उसकी निर्भरता काफी हद तक बढ़ गई।

स्वेज़ संकट के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ ने मिस्र-इज़राइल सीमा पर संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन बल तैनात कर दिया। अत: यह कहना गलत नहीं होगा कि स्वेज़ संकट के पश्चात् विश्व की प्रमुख शक्ति के रूप में ब्रिटेन प्रभावी नहीं रह गया था।

2013

प्रश्न: "यूरोपीय प्रतिस्पर्द्धा की दुर्घटनाओं द्वारा अफ्रीका को कृत्रिम रूप से निर्मित छोटे-छोटे राज्यों में काट दिया गया" विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

"Africa was chopped into states artificially created by accident of European competition." Analyze.

उत्तर: 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उपनिवेशवाद के विस्तार के साथ नवसाम्राज्यवाद का काल प्रारंभ हुआ। इस काल में साम्राज्यवादी देशों ने उन्नत प्रौद्योगिकी के द्वारा विभिन्न देशों को विजित किया तथा उनके संसाधनों का दोहन किया। इस समय अफ्रीका में राज्य या राज्यों के सीमांत नहीं हुआ करते थे। सभी साम्राज्यवादी ताकतों के सामने मैदान खुला हुआ था।

कारण
- औद्योगिक क्रांति
- सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता
- तैयार माल को बेचने हेतु बाज़ार
- कच्चे माल की आवश्यकता

- सर्वप्रथम बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड-II ने अफ्रीका के संसाधनों से लाभ उठाने के लिये 1876 में ब्रूसेल्स में एक सम्मेलन आयोजित किया।
- अफ्रीका के मध्यवर्ती क्षेत्रों के सरदारों से संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करवाकर उन पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- इस गतिविधि से अन्य यूरोपीय राष्ट्र, जैसे– ब्रिटेन और पुर्तगाल ने कांगो नदी पर नियंत्रण के लिये एक संयुक्त आयोग की स्थापना की।
- 1884-85 में संपन्न हुए बर्लिन सम्मेलन को प्राय: अफ्रीका के विभाजन का आरंभिक बिंदु माना जाता है।
- इसके अनसार जिस यूरोपीय देश के अधिकार में अफ्रीका का कोई तटवर्ती क्षेत्र होगा, उसे उस क्षेत्र के भीतरी इलाकों को अधिकृत करने में प्राथमिकता मिलेगी।
- इस प्रकार अफ्रीका के भू-भाग पर कब्ज़े को मान्यता मिलती गई और अफ्रीका छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया।
- मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य स्थापित हुआ तो अल्जीरिया पर फ्राँस का, इसके अलावा गुआना, आइवरीकोस्ट पर भी फ्राँस का अधिकार हुआ।
- दक्षिण अफ्रीका, जांबिया और जिंबाब्वे पर भी ब्रिटेन का आधिपत्य हुआ। पुर्तगाल ने अंगोला तथा जर्मनी ने कैमरून पर नियंत्रण स्थापित किया।

इस प्रकार यूरोपीय साम्राज्यवादी देश अफ्रीका के भू-भाग पर कब्ज़ा करके उसे अपनी सुविधानुसार कृत्रिम रूप में बाँटते गए। 20वीं सदी में जब ये उपनिवेश स्वतंत्र हुए तो वे उसी रूप में छोटे-छोटे देशों के रूप में सामने आए और इसी कृत्रिम बँटवारे का ही परिणाम है कि अफ्रीका में छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इसी संदर्भ में कहा जाता है कि "अफ्रीका का विभाजन टेबल पर कैंचियों के सहारे कर दिया गया।"

प्रश्न: आर्थिक महामंदी से निपटने के लिये किन नीतिगत साधनों का प्रयोग किया गया था? (150 शब्द, 10 अंक)

What policy instruments were deployed to contain the Great Economic Depression?

उत्तर: 1929 की आर्थिक महामंदी विश्व के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा आर्थिक संकट था। इसकी जड़ें प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् वैश्विक व्यापार में गिरावट, कृषि उत्पादनों के मूल्य में कमी तथा फ्राँस व अमेरिका में सोने के संकेंद्रण में थीं, लेकिन तात्कालिक कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के वॉल स्ट्रीट शेयर बाज़ार में शेयरों की कीमतों का गिरना था। इस कारण से यूरोप, जो कि आर्थिक दृष्टि से अमेरिकी ऋणों पर ही आश्रित था, अचानक आधारहीन हो गया था व सोवियत संघ को छोड़कर लगभग सारी यूरोपीय अर्थव्यवस्था अस्थिर हो गई थी।

आर्थिक महामंदी से निपटने के लिये निम्न नीतिगत साधनों का प्रयोग किया गया है–

नीतिगत साधन

राष्ट्रीय हूवर की योजना हूवर विलंबर काल (योजना) के नाम से
- ❑ 1932 तक भुगतान की सभी किस्तों को स्थगित कर दिया जाए।
- ❑ एक वर्ष तक जर्मनी से क्षतिपूर्ति को वसूला न जाए।
- ❑ यंग योजना के अनुसार क्षतिपूर्ति जर्मन में ही बैंक 'ऑफ इंटरनेशनल सेटेलमेंट्स' में लगा दी जाए

रूजवेल्ट का न्यू डील कार्यक्रम
- ❑ जर्मनी की योजना
- ❑ जर्मन आर्थिक संघ का विचार
- ❑ जर्मनी + ऑस्ट्रिया एक समान, आर्थिक नीति
- ❑ युद्ध सामग्रियों और सार्वजनिक निर्माण पर अत्यधिक बल दिया, रोज़गार का सृजन।

1993 का लंदन सम्मेलन
- ❑ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में संरक्षणवादी नीति का त्याग, आपसी सहयोग को सुदृढ़ बनाया जाए, ताकि विश्व व्यापार में वृद्धि हो सके।
- ❑ ब्रिटेन द्वारा स्वर्ण प्रतिमान का त्याग कर दिया गया

रूजवेल्ट का न्यू डील कार्यक्रम

- औद्योगिक नीति: राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुत्थान अधिनियम पारित किया गया।
- मज़दूरी में वृद्धि, काम के घंटों में वृद्धि की।
- कृषि नीति: कृषि उत्पादन व औद्योगिक वस्तुओं के मूल्य में समता हो।
- कृषि समायोजना-कानून पारित किया गया।
- मुद्रा एवं साख संबंधी नीति: बैंकिंग कंपनी एक्ट 1933 पास किया गया।
- वस्तु विनियम अधिनियम द्वारा कृषि वस्तुओं का नियमन किया गया।

न्यू डील कार्यक्रम के अंतर्गत स्वर्णमान का भी परित्याग कर दिया और निर्यात के लिये डॉलर का भी अवमूल्यन करने की नीति अपनाई।

आर्थिक महामंदी ने विश्व को समाजवादी व्यवस्था व आर्थिक राष्ट्रवाद व आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों की ओर

अग्रसर किया। न्यू डील नीति से अमेरिका के साथ यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्थाओं में भी सुधार आया। परिणामस्वरूप 1939 आते-आते महामंदी तो खत्म हो गई, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध ने विश्व को अपने आगोश में ले लिया।

प्रश्न: विलंब से होने वाली जापानी औद्योगिक क्रांति में कुछ ऐसे कारक भी थे, जो पश्चिमी देशों के अनुभवों से बिल्कुल भिन्न थे, विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'Latecomer' Industrial revolution in Japan involved certain factors that were markedly different from what West had experience. Analyze.

उत्तर: औद्योगिक क्रांति एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था से उद्योग और मशीन निर्माण के वर्चस्व वाली अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया है। यह 18वीं सदी में ब्रिटेन में शुरू हुई और वहाँ से दुनिया के दूसरे हिस्से में फैल गई, जबकि जापानी औद्योगिक क्रांति 19वीं सदी के अंत में मेईजी शासन की पुनर्स्थापना (1868) के बाद शुरू हुई।

जापानी औद्योगिक क्रांति के कुछ ऐसे कारक, जो पश्चिमी देशों से भिन्न हैं

- जापानी औद्योगीकरण पश्चिम की तुलना में बहुत तेज़ गति से हुआ।
- जापान में औद्योगिक क्रांति यूरोपीय देशों की तुलना में विलंब से शुरू हुई।
- जापानी औद्योगीकरण में राज्य प्रमुख भूमिका में था।
- जबकि पश्चिम में निजी क्षेत्र का नेतृत्व अधिक था।
- पश्चिमी औद्योगीकरण क्षेत्र कोयले तथा लौह दोनों से समृद्ध थे, जबकि जापान इन संसाधनों के लिये आयात पर निर्भर था।
- औद्योगिक क्रांति से पहले पश्चिम में कृषि क्रांति, वाणिज्यिक क्रांति देखी, लेकिन जापान में ऐसा नहीं था।
- जापानी औद्योगीकरण की प्रक्रिया युद्ध उपकरणों के निर्माण की आवश्यकता से भी प्रेरित थी, जबकि पश्चिमी देशों में औद्योगिक क्रांति के पीछे उपभोक्ता वस्तुओं की प्रधानता थी।
- पश्चिम में औद्योगिक क्रांति के लिये पूंजी उपनिवेशों से आई, जबकि जापान में यह राज्य द्वारा कृषि क्षेत्र से जबरन निष्कर्षण था।

पश्चिम में पूंजीवाद के विकास के फलस्वरूप एक नवोदित मध्यवर्ग का उदय हुआ, जिसने राज्य की निरंकुशता पर नियंत्रण लगाया, वहीं जापान में ऐसा नहीं हुआ और राज्य के नेतृत्व में ही पूंजीवाद का विकास हुआ।

कुछ समानता भी थी

- औद्योगीकरण अपने साथ आबादी लेकर आया, जिसने जापान में परिवार व्यवस्था को उसी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया, जैसा कि पश्चिमी देशों में किया।
- नए पश्चिमी मूल्य भी जापानी समाज में प्रवेश कर गए।
- पश्चिम की तरह जापान का औद्योगीकरण जापान में साम्राज्यवाद से जुड़ गया।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जापान में होने वाली औद्योगिक क्रांति में कुछ तत्त्व ऐसे भी थे, जो इसके पूर्व के यूरोपीय अनुभवों से भिन्न थे।

प्रश्न: "अमेरिकी क्रांति वणिकवाद के विरुद्ध एक आर्थिक विद्रोह था।" इस कथन की पुष्टि कीजिये? (150 शब्द, 10 अंक)

American Revolution was an economic revolt against mercantilism. Substantiate.

उत्तर: वणिकवाद से आशय आर्थिक जीवन, उद्योग-धंधों तथा व्यापारिक कार्यकलापों का सरकार द्वारा नियमन है। इसके अंतर्गत बुलियनवाद, अर्थात् सरकार द्वारा सोना-चांदी का संचय भी समाहित था। स्वतंत्र व्यापार के सिद्धांत के प्रचलित होने के कारण वणिकवाद का पतन शुरू हो गया। अमेरिकी क्रांति वणिकवाद अथवा वाणिज्यवाद के विरुद्ध पहला विद्रोह था।

- 18वीं शताब्दी के मध्य तक इंग्लैंड ने अमेरिका में 13 उपनिवेश स्थापित किये।
- वाणिज्यवादी सिद्धांत के अनुसार ब्रिटेन अमेरिकी उपनिवेशों के व्यापार तथा बाज़ारों पर एकाधिकार रखना चाहता था।
- अपने लाभ को ध्यान में रखते हुए अनेक कानून बनाए, जैसे- नौ संचालन कानून, व्यापारिक कानून तथा औद्योगिक कानून प्रमुख थे।
- नौ संचालन कानून के अनुसार अमेरिकी उपनिवेशवासियों को गैर-ब्रिटिश जहाज़ की मनाही थी।
- वे अपना सामान केवल ब्रिटेन में ही बेच सकते थे।
- इन सभी औपनिवेशिक और वाणिज्यवादी कानूनों के विरुद्ध उपनिवेशों में असंतोष की भावना विकसित होने लगी। 1764 ई. के शुगर एक्ट तथा 1765 में स्टॅाप एक्ट से असंतोष और बढ़ गया।
- 1773 में सैमुअल एडम के नेतृत्व में बोस्टन टी पार्टी की घटना घटी।

1774 ई. में फिलाडेल्फिया में सभी उपनिवेशों के नेताओं की बैठक हुई, जिसमें ब्रिटिश संसद से इस बात की मांग की गई कि उद्योगों और व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को हटा लिया जाए। किंतु, ब्रिटिश सरकार से वार्ता का यह प्रयास विफल हो गया और ब्रिटिश सरकार तथा उपनिवेशवासियों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया। 4 जुलाई, 1776 को अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी तथा जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना को पराजित कर एक स्वतंत्र संयुक्त राज्य की स्थापना की।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अमेरिकी क्रांति के पीछे ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक तथा वाणिज्यिक नीतियाँ उत्तरदायी थीं। अत: यह कहना उचित प्रतीत होता है कि अमेरिकी क्रांति ब्रिटिश वाणिज्यवादी नीतियों के विरुद्ध एक आर्थिक विद्रोह थी।